प्रभु के अभिषेक के लिए तेल: समय और आज्ञाकारिता पर विचार

प्रभु यीशु के नाम की स्तुति हो।

बाइबिल यीशु के जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं उनकी मृत्यु, उनका दफन और पुनरुत्थान पर बल देती है। ये घटनाएं गहरी धार्मिक महत्ता रखती हैं और हमें महत्वपूर्ण शिक्षा देती हैं। इनमें से एक घटना है यीशु का तेल से अभिषेक, जिसे कई शास्त्रों में वर्णित किया गया है। इसे बेहतर समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि अभिषेक का तेल और खुशबू में क्या अंतर होता है।

अभिषेक का तेल और यहूदी दफनाने की प्रथा

यहूदी परंपरा में मृत व्यक्ति को अक्सर तेल, खासकर “मरहम” या अन्य मसालों के साथ, विशेषकर सिर पर अभिषेक किया जाता था। खुशबूदार तेल भी इस्तेमाल होता था, पर वह अभिषेक के तेल जैसा तरल रूप में नहीं होता था। अभिषेक का उद्देश्य केवल व्यावहारिक नहीं था, बल्कि यह सम्मान, प्रतिष्ठा और पवित्रता का प्रतीक था।

यीशु के दफन के समय एक बात ध्यान देने योग्य है: अरिमथिया के योसेफ और निकोदेमुस परंपरा का पालन तो कर रहे थे, लेकिन उन्होंने सामान्य अभिषेक तेल का इस्तेमाल नहीं किया।

यूहन्ना 19:38-40

प्रभु के अभिषेक के लिए तेल: समय और आज्ञाकारिता पर विचार

“फिर अरिमथिया का योसेफ, जो यीशु का शिष्य था, डर के कारण यहूदियों से छिपकर पिलातुस से प्रार्थना की कि वह यीशु का शरीर उतार सके। पिलातुस ने अनुमति दी। वह आया और यीशु का
शरीर उतारा। निकोदेमुस भी आया, जो पहले रात को यीशु से मिला
था, और वह लगभग सौ पाउंड मुर्रा और एलो का मिश्रण लाया। तब उन्होंने यीशु का शरीर लिया और उसे लिनन के कपड़ों में बाँध कर, जो यहूदियों की परंपरा के अनुसार खुशबूदार तेल के साथ दफनाया।”

हालांकि उन्होंने मुर्रा और एलो लाए थे, जो दफनाने के लिए सामान्य सामग्री थी, पर वे पारंपरिक अभिषेक तेल का इस्तेमाल नहीं कर पाए, जो विशेषकर सिर पर लगाया जाता था। इसलिए यह महत्वपूर्ण धार्मिक रस्म अधूरी रह गई।

महिलाओं का इरादा: देर से प्रेम का कार्य

यीशु के पीछे चली महिलाएं—जिनमें मरियम मगदलीना भी थी—सप्ताहांत के बाद उनके शरीर को अभिषेक तेल से अभिषिक्त करना चाहती थीं, लेकिन उन्हें शाब्बाथ की विश्राम के कारण इंतजार करना पड़ा।

प्रभु के अभिषेक के लिए तेल: समय और आज्ञाकारिता पर विचार

लूका 23:54-56

“और वह तैयारी का दिन था, और शाब्बाथ शुरू हो रहा था। जो महिलाएं उनके साथ गलील से आई थीं, वे उनके मकबरे को देख रही
थीं और शरीर को दफन होते देख रही थीं। वे लौटकर खुशबूदार तेल
और अभिषेक के लिए तैयारी करने लगीं। लेकिन शाब्बाथ के दिन
वे अपने नियम के अनुसार विश्राम कर रही थीं।”

शाब्बाथ पवित्र था और 2 मूसा 20:8-11 के अनुसार उस दिन कोई काम नहीं किया जाना था। इसलिए उन्हें अभिषेक के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी, जो आज्ञाकारिता और समर्पण का संकेत था।

प्रकाशन: यीशु पुनरुत्थित हो चुके थे

जब रविवार की सुबह महिलाएं मकबरे पर पहुंचीं, तब यीशु पहले से ही जीवित हो चुके थे। उनकी प्रेमपूर्वक तैयार की गई सेवा देरी से आई थी प्रभु पहले ही मृत्यु पर विजय पा चुके थे।

लूका 24:1-3

प्रभु के अभिषेक के लिए तेल: समय और आज्ञाकारिता पर विचार

“सप्ताह के पहले दिन वे बहुत सुबह मकबरे पर आईं, अपने साथ वे खुशबूदार तेल लेकर आई थीं जो उन्होंने तैयार किए थे। लेकिन
वे पत्थर को मकबरे से हटा हुआ पाया। जब वे अंदर गईं तो
उन्हें प्रभु यीशु का शरीर नहीं मिला।”

धार्मिक अर्थ: अभिषेक दफन के लिए था (मत्ती 26:12 देखें), लेकिन पुनरुत्थान के बाद इसकी आवश्यकता समाप्त हो गई। मृत्यु पर विजय मिल गई और रीति-रिवाज अपना अर्थ खो बैठे।

तेल से अभिषिक्त करने वाली महिला: सही समय पर उपासना का आदर्श

इसके विपरीत, बेथानिया की मरियम ने सही समय पर कार्य किया। उसने यीशु के जीवित रहते अभिषेक किया एक भविष्यवाणीपूर्ण उपासना।

मत्ती 26:6-13

“जब यीशु बेथानिया में लेपर्स के साइमोन के घर में था, तब एक
औरत एक अलाबास्टर के पात्र में कीमती तेल लेकर आई और उसे
उसके सिर पर डाला, जब वह भोजन कर रहा था। यह देखकर शिष्यों को बुरा लगा और वे बोले, ‘यह व्यर्थ व्यय क्यों?’ इसे महंगे दाम पर बेचकर गरीबों को दे देना चाहिए था। यीशु ने उन्हें
सुनाया, ‘क्यों तुम इस औरत को दुःखी करते हो? उसने मेरे लिए

प्रभु के अभिषेक के लिए तेल: समय और आज्ञाकारिता पर विचार

एक अच्छा काम किया है। क्योंकि तुम हमेशा गरीबों के साथ रहोगे, परन्तु मुझसे हमेशा नहीं रहोगे। उसने यह तेल मेरे
शरीर पर मेरे दफन के लिए डाला। मैं सच कहता हूं कि जब भी यह सुसमाचार पूरी दुनिया में प्रचारित होगा, तब उसकी यह बात
याद की जाएगी।’”

सीख: मरियम ने सही समय पर कार्य किया और उसकी आज्ञाकारिता भविष्यवाणी थी। यीशु ने बताया कि उसका कार्य अनंतकाल तक याद रखा जाएगा।

मोड़ा हुआ कपड़ा: आशा का प्रतीक

पुनरुत्थान के बाद शिष्यों ने मकबरे में मोड़ा हुआ लिनन का कपड़ा देखा—एक छोटा सा विवरण, पर गहरी धार्मिक महत्ता वाला।

यूहन्ना 20:6-7

“फिर शिमोन पेत्रुस उसके पीछे गया और मकबरे में गया। उसने लिनन के कपड़े पड़े देखे और उस पोंछे को जो यीशु ने अपने सिर से बांधा था, वह लिनन के कपड़ों के साथ नहीं पड़ा था, बल्कि
एक अलग जगह पर मोड़ा हुआ पड़ा था।”

प्रभु के अभिषेक के लिए तेल: समय और आज्ञाकारिता पर विचार

यह मोड़ा हुआ कपड़ा दर्शाता है: यीशु का कार्य पूरा हो चुका है (यूहन्ना 19:30 देखें), परन्तु उनकी मिशन जारी है। यह आशा का चिन्ह है और यह संकेत देता है कि वे फिर लौटेंगे।

धार्मिक शिक्षा: सही समय, उपासना और सेवा

परमेश्वर को सही समय पर सेवा करना महत्वपूर्ण है। महिलाएं अच्छे इरादे के साथ आईं, पर देर से। बेथानिया की मरियम ने सही समय पर कार्य किया।

सभोपदेशक 3:1

“सब चीज़ का एक समय होता है, और हर कार्य के नीचे आकाश के समय होता है।”

निष्कर्ष: आज ही प्रभु की सेवा करें

यीशु ने कहा: “गरीब तुम हमेशा अपने पास रखोगे, पर मुझको हमेशा नहीं रखोगे” (मत्ती 26:11)। परमेश्वर की सेवा का अवसर हमेशा नहीं मिलेगा। जो समय मिला है, उसका उपयोग करें।

प्रभु के अभिषेक के लिए तेल: समय और आज्ञाकारिता पर विचार

कल का इंतजार मत करें—परमेश्वर की सेवा का समय अभी है।

मरनथा!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp